BRABU. Muzaffarpur.

Degree -1 Paper-II

## कर्म (Karma)

'कर्म' की धारणा प्रत्येक भारतीय के मन में इतनी प्रबल है कि वेदान्त, उपनिषदों और स्मृतियों से अनभिज्ञ व्यक्ति भी इतना अवश्य जानता है कि वह जैसे कर्म करेगा उसका फल उसे अवश्य मिलेगा। सभी व्यक्तियों की यह दृढ़ मान्यता है कि पूर्व-जन्म में उन्होंने जैसे कर्म किये हैं उनका फल उन्हें इस जीवन में मिल रहा है और इस जीवन के किये गये कर्मों का फल अवश्यक रूप से आगामी जीवन में भोगना पड़ेगा।

'कर्म' शब्द संस्कृत भाषा के शब्द 'कर्मन' से बना है जिसका अर्थ क्रिया, कृत्य, कर्तव्य, कार्य अथवा दैव (भाग्य) है। इससे स्पष्ट होता है कि शाब्दिक रूप से 'कर्म' का तात्पर्य किसी भी ऐसी क्रिया से है जिसका सम्बन्ध व्यक्ति के दायित्वों से है अथवा जो

classmate
Date :
Page : 2

व्यक्ति के भाग्य का निर्माण करती है। वास्तव में, कर्म से हमारा तात्पर्य उन सभी क्रियाओं से है जिनका सम्बन्ध शरीर (कायिक), वाणी (वाचा) तथा मन (मनसा) से है। इसका तात्पर्य है कि बाह्य रूप से व्यक्ति जो क्रिया करता है, केवल वही कर्म नहीं है बल्कि वह दूसरों से जो कुछ भी कहता है अथवा वह मन में जैसा विचार करता है उसे भी कर्म के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। कर्म के तीन भेदों अर्थात् (क) प्रारब्ध, (ख) संचित कर्म, तथा (ग) क्रियमाण के द्वारा समझा जा सकता है। संचित कर्म वे हैं जो व्यक्ति ने अपने पूर्व जन्म में किये हैं। इनमें से जितने कर्मों का फल व्यक्ति को इस जीवन में भोगने को मिल रहे हैं वह उसका प्रारब्ध है। क्रियमान वह कर्म है जो मनुष्य इस जीवन में कर रहा है। इस प्रकार आगामी जीवन में व्यक्ति को जो कर्मफल प्राप्त होगा वह संचित और क्रियमाण का परिणाम होगा। इससे स्पष्ट होता है कि कर्म की धारणा केवल वर्तमान जीवन से ही सम्बन्धित नहीं है बल्कि यह पुनर्जन्म के सम्पूर्ण चक्र को प्रभावित करती है।

———×———